INDEX

Name :

Std. : Div. : Roll No. :

Sub. :

School :

Sundaram® Books for Success...

Sr. No.	Date	Subject	Page No.	Sign.
		निराला		
		राग - विराग		
		राम की शक्तिपूजा		
		कुकुरमुत्ता		
		प्रसाद		
		कामायनी		
		चिन्ता		
		श्रद्धा		
		महादेवी वर्मा		
		सुमित्रानंदन पंत		
		माखनलाल चतुर्वेदी, सुभद्राकुमारी चौहान,		
		बालकृष्ण शर्मा नवीन, भगवती चरण वर्मा		
		नरेन्द्र शर्मा, बच्चन		
		कुरुक्षेत्र		
		रामधारी सिंह दिनकर		
		भारत भारती		
		मैथिलीशरण गुप्त		
		स्वच्छन्दतावाद		
		श्रीधर पाठक, हरिऔध		

Scanned by CamScanner

S. No.	Date	Subject	Page No.	Sign.

निराला

1) तोड़ो तोड़ो तोड़ो कारा
निकले फिर गंगाजल धारा

2) दुख ही जीवन की कथा रही
क्या कहूँ आज जो नहीं कही

3) मेघमय आसमान से
उतर रही है
संध्या सुन्दरी परी सी
धीरे धीरे धीरे

4) शक्ति की करो मौलिक कल्पना
करो सृजन

5) मैंने मैं शैली अपनाई

6) मुक्त हो सदा तुम
बाधा-विहीन छंद-बंध ज्यों

7) लख महाभाव मंगल पदतल —
धँस रहा गर्व
मानव के मन का असुर मंद,
हो रहा खर्व

8) धन्ये, गत कर्मों का अर्पण
कर, करता मैं तेरा तर्पण

9) जागो फिर एक बार
अमृत संतान
शेरों की माँद में / आया है आज स्यार

10) पश्चिम की उक्ति नहीं / योग्य जन जीता है।
गीता है गीता है

11) क्रम क्रम से हुए पार
राघव के पंच दिवस,
चक्र से चक्र मन
चढ़ता गया ऊर्ध्व निरलस

12) गाया स्वर्गीया प्रिया संग
भरता प्राणों में राग रंग

13) धन्ये मैं पिता निरर्थक था
कुछ भी तेरे हित कर न सका
× × × ×
लखकर अनर्थ आर्थिक पथ पर
हारता रहा मैं स्वार्थ समर

14) काँपा कोमलता पर सस्वर
ज्यों मालकोश नववीणा पर

15) लौटी रचना लेकर उदास
ताकता हुआ मैं दिशाकाश

16) राग विराग

(i) रंग गई पग-पग
धन्य धरा
हुई जग जगमग
मनोहरा

(ii) विजन वन वल्लरी पर
सोती थी सुहागभरी
स्नेह स्वप्न मग्न
अमल कोमल तनु तरुणी
जुही की कली

(iii) सखि वसंत आया
भरा हर्ष वन के मन
नवोत्कर्ष छाया

(iv) नव गति, नव लय, ताल-
छंद नव
नवल कंठ, नव जलद मन्द्र रव
नव नभ के नव विहग वृंद को
नव पर, नव स्वर दे

(i) मैं अकेला; देख रहा हूँ
आ रही
मेरे दिवस की सांध्य बेला

(ii) स्नेह निर्झर बह गया
रेत ज्यों तन रह गया।
मैं अलक्षित हूँ, यही
कवि कह गया

(iii) है अमानिशा उगलता
गगन घन अंधकार

(iv) दुख ही जीवन की
कथा रही

लौटी रचना लेकर उदास
ताकता रहा मैं दिशाकाश

(v) भारती, जय, विजय करे
कनक - शस्य - कमल धरे

(17) चूम चरण मत चोरों के तू
गले लिपट मत गोरों के तू

(18) पेट पीठ ~~मिलकर~~ दोनों मिलकर हैं एक
चल रहा लकुटिया टेक

(19) वह तोड़ती पत्थर
इलाहाबाद के पथ पर

(20) अमिय गरल, शशि-सीकर, रवि-कर
राग - विराग भरा प्याला
पीते हैं जो साधक उनका
प्यारा है यह मतवाला

(21) भग्न तन रुग्ण मन
जीवन विषण्ण वन

(22) दुरित दूर करो नाथ
× × × ×
हार गया जीवन रण
छोड़ गए साथी जन

(23) हरि का मन ~~से~~ आविर्भाव करो
(अर्चना)

(24) जीर्ण बाहु है शीर्ण शरीर
तुझे बुलाता कृषक अधीर
ऐ! विप्लव के वीर

(25) जागो जावो आया प्रभात
बीती वह बीती अंध रात

(26) जागा जागा संस्कार प्रबल
रे गया काम तत्क्षण वह जल

Scanned by CamScanner

राम की शक्तिपूजा

1) रवि हुआ अस्त

2) अनिमेष राम विश्वजिद्दिव्य शर भंग भाव

3) लौटे युगदल।
राक्षस पदतल पृथ्वी टलमल
× × × ×
वानर वाहिनी खिन्न

4) फैला पृष्ठ पर, बाहुओं पर
वक्ष पर विपुल
उतरा ज्यों दुर्गम पर्वत पर नैशांधकार
चमकतीं दूर ताराएँ ज्यों हो कहीं पार
(विपर्यस्त जटा मुकुट का बिंब)

5) है अमानिशा उगलता गगन घन
अंधकार;
खो रहा दिशा का ज्ञान,
स्तब्ध है पवन चार;
अप्रतिहत गरज रहा, पीछे अंबुधि विशाल
भूधर ज्यों ध्यानमग्न;
केवल जलती मशाल

6) स्थिर राघवेन्द्र को हिला रहा
फिर-फिर संशय

7) नयनों का नयनों से गोपन-
प्रिय संभाषण
पलकों का नव पलकों पर -
प्रथमोत्थान पतन
काँपते हुए किसलय- झरते पराग समुदय
गाते खग नव जीवन परिचय
तरु मलय वलय

8) विश्व विजय भावना
हृदय में आयी भर:

9) फिर देखी भीमा मूर्ति
आज रण देखी जो
फिर सुना हँस रहा
अट्टहास रावण खलखल
भावित नयनों से सजल गिरे दो मुक्तादल

10) जपते सभक्ति अजपा
विभक्त हो राम नाम

11) 'ये अश्रु राम के, आते ही मन में विचार
उद्वेल हो उठा शक्ति खेल सागर अपार

१२) चिर ब्रह्मचर्य रत
ये एकादश रुद्र, धन्य

१३) ××× इन पर प्रहार
करने पर होगी देवि,
तुम्हारी विषम हार

१४) कितना श्रम हुआ व्यर्थ!
××××
बैठा उपवन में देगा दुख सीता को फिर
× × ××
मैं बना किन्तु लंकापति

१५) ज्यों हो वे शब्द मात्र

१६) रावण रथी विरथी रघुवीरा।
देखि विभीषण भयहुँ अधीरा।

१७) "मित्रवर, विजय होगी न समर,
××××
अन्याय जिधर है उधर शक्ति!"

१८) रावण अधमरत भी अपना
मैं हुआ अपर

१९) जो हुए प्रजापतियों के संयम से रक्षित
वे शर हो गए आज रण में
श्रीहत खण्डित!

२०) आराधन का, दृढ़ आराधन से दो उत्तर

२१) रावण अशुद्ध होकर भी
यदि कर सकता त्रस्त
तो निश्चय तुम हो सिद्ध
करोगे उसे ध्वस्त

२२) शक्ति की करो मौलिक कल्पना,
करो पूजन

२३) मैं सिंह इसी भाव से
करूँगा अभिनंदित

२४) शक्ति के विद्युत्कण,
जो व्यस्त विकल बिखरे हैं - हो निरुपाय
समन्वय उसका करे समस्त
विजयिनी मानवता हो जाए

२५) देखो बंधुवर, सामने स्थित जो यह भूधर
पार्वती कल्पना है इसकी

26) लख महाभाव मंगल पद तल
धँस रहा गर्व
मानव के मन का असुर मन्द
हो रहा खर्व

27) निशि हुई विगत

28) क्रम क्रम से हुए पार
राघव के पंच दिवस
चक्र से चक्र मन चढ़ता गया
ऊर्ध्व निरलस

29) हुआ सहसा स्थिर मन चंचल

30) धिक् जीवन को जो पाता ही आया विरोध
× ×××
जानकी! हाय, उद्धार प्रिया का हो न सका

31) वह एक और मन रहा राम का
जो न थका,
जो नहीं जानता दैन्य,
नहीं जानता विनय
(न दैन्य न च पलायनम्)

32) ××× यह पुरश्चरण
पूरा करता हूँ देकर मात: एक नयन

33) होगी जय होगी जय –
हे पुरुषोत्तम नवीन!
कह महाशक्ति राम के वदन –
में हुई लीन।

---

1) अबे सुन बे गुलाब (कुकुरमुत्ता)
× × × ×
खून चूसा खाद का तूने अशिष्ट
डाल पर इतराता कैपीटलिस्ट

2) तू हरामी खानदानी

3) तू है नकली मैं हूँ मौलिक
तू है बकरा, मैं हूँ कौलिक

4) मुझसे बूँछे, मुझसे कल्ला
मेरे लल्लू, मेरे लल्ला

5) नाचता है सूदखोर जहाँ कहीं ब्याज डुबता
नाच मेरा क्लाइमैक्स पर पहुँचता

6) पर हैं प्रोलेटेरियन झगड़े जहाँ
मियाँ बीवी के, क्या कहना है वहाँ

Scanned by CamScanner

7) कहाँ का रोड़ा, कहाँ का पत्थर
टी. एस. एलियट ने जैसे दे मारा

8) प्रोग्रेसिव का कलम लेते ही
रोके नहीं रुकता जोश का पारा

9) तीर से खींचा धनुष में राम का
काम का
पड़ा कन्धे पर हल हूँ बलराम का

10) सास पर तहजीब की
गोद पर तरतीब की

11) चटकती कलियाँ
निकलती मृदुल गंध

12) जगह गन्दी
रुका सड़ता हुआ पानी

उसके आगे तुम
हिलाता टेरियर
आधुनिक पोएट

(प्रसाद)

1) ले चल मुझे भुलावा देकर
मेरे नाविक धीरे धीरे

2) पागल रे! वह मिलता है कब, (प्रेम)
उसको तो देते ही हैं सब

3) तुम कनक किरण के अन्तराल में,
लुक छिप कर चलते हो क्यों?
हे लाज भरे सौन्दर्य बता दो
मौन बने रहते हो क्यों?

4) हृदय की अनुकृति बाह्य उदार
एक लम्बी काया उन्मुक्त

5) प्रकृति के यौवन का श्रृंगार
करेंगे कभी न बासी फूल
मिटेंगे वे जाकर अतिशीघ्र
आह उत्सुक है उनकी धूल

6) शशि मुख पर घूंघट डाले
अंचल में दीप छिपाए
जीवन की गोधूलि में
कौतूहल से तुम आए

7) शक्ति के विद्युतकण,
जो व्यस्त विकल बिखरे हैं हो निरुपाय
समन्वय उनका करे समस्त
विजयिनी मानवता हो जाए

8) इस पथ का उद्देश्य नहीं है
श्रान्त भवन में टिक रहना
किन्तु पहुँचना उस सीमा तक
जिसके आगे राह नहीं

कर्म

9) इस करुणा कलित हृदय में
अब विकल रागिनी बजती
क्यों हाहाकार स्वरों में
वेदना असीम गरजती

10) सबका निचोड़ लेकर तुम
सुख से सूखे जीवन में
बरसो प्रभात हिमकन सा
आँसू इस विश्व सदन में

11) उठ-उठ गिर गिर फिर फिर आती
नर्तित पद चिह्न बना जाती

12) बीती विभावरी जाग री
अम्बर पनघट में डुबो रही
ताराघट ऊषा नागरी

13) हिमाद्री तुंग शृंग से
प्रबुद्ध शुद्ध भारती
स्वयंप्रभा समुज्ज्वला
स्वतंत्रता पुकारती

14) अरुण यह मधुमय देश हमारा
जहाँ पहुँच अनजान क्षितिज को
मिलता एक सहारा

Scanned by CamScanner

कामायनी

चिन्ता सर्ग

1) जीवन तेरा क्षुद्र अंश है, व्यक्त नील घनमाला में
सौदामिनी संधि सा सुंदर, क्षणभर रहा उजाला में

आशा

2) उषा सुनहले तीर बरसाती
जयलक्ष्मी सी उदित हुई

3) आह! कल्पना का सुन्दर
वह जगत मधुर कितना होगा

लज्जा

4) मैं रति की प्रतिकृति लज्जा हूँ
शालीनता सिखलाती हूँ

5) नारी तुम केवल श्रद्धा हो,
विश्वास रजत नग पग तल में
पीयूष स्रोत सी बहा करो
जीवन के सुन्दर समतल में

6) आँसू से भीगे अंचल पर
मन का सब कुछ रखना होगा
तुमको अपनी स्मिति रेखा से
यह संधि-पत्र लिखना होगा

कर्म

7) ये प्राणी जो बचे हुए हैं
इस अचला जगती के
उनके कुछ अधिकार नहीं क्या
ये सब ही हैं फीके?

8) औरों को हँसते देखो मनु,
हँसो और सुख पाओ।
अपने सुख को विस्तृत कर लो
सबको सुखी बनाओ

इड़ा सर्ग

9) तुम भूल गए पुरुषत्व मोह में
कुछ सत्ता है नारी की

10) वन गुहा कुंज मरु अंचल
में हूँ खोज रहा अपना विकास

11) लू सा झुलसता दौड़ रहा
कब मुझसे है कोई फूल खिला

स्वप्न

12) कामायनी कुसुम वसुधा पर पड़ी
न वह मकरन्द रहा
एक चित्र बस रेखाओं का
अब उसमें है रंग कहाँ

Scanned by CamScanner

(दर्शन)

13) सिर चढ़ी रही, पाया न हृदय

(रहस्य)

14) ज्ञान दूर कुछ क्रिया भिन्न है,
इच्छा पूरी क्यों हो मन की।
एक दूसरे से न मिल सके,
यह विडंबना है जीवन की।

(आनंद सर्ग)

15) वे युगल वहीं अब बैठे
संसृति की सेवा करते

16) समरस थे जड़ या चेतन
सुंदर साकार बना था
चेतनता एक विलसती
आनंद अखंड घना था।

---

1) एक तत्व की ही प्रधानता [चिन्ता]
कहो उसे जड़ या चेतन

2) उसी तपस्वी से लम्बे थे
देवदारु दो चार खड़े

3) ओ चिन्ता की पहली रेखा
अरि विश्व वन की व्याली

4) मनन करावेगी तू कितना
उस निश्चिन्त जाति का जीव

---

5) विस्मृति आ अवसाद घेर ले
नीरवते बस चुप कर दे

6) प्रकृति थी दुर्जय, पराजित हम सब थे
भूले मद में

7) वह उन्मत्त विलास हुआ क्या
स्वप्न रहा या छलना थी

8) दिग्दाहों से धूम उठे,
या जलधर उठे क्षितिज तट के
सघन गगन में भीम प्रकंपन
झंझा के चलते झटके,

---

1) नील परिधान बीच सुकुमार [श्रद्धा]
खिल रहा मधुर अधखुला अंग
खिला हो ज्यों बिजली का फूल
मेघ वन बीच गुलाबी रंग

2) कर रही लीलामय आनंद, महाचिति सजग हुई सी व्यक्त
विश्व का उन्मीलन अभिराम
इसी में सब होते अनुरक्त

Scanned by CamScanner

3) काम मंगल से मंडित श्रेय
सर्ग इच्छा का है परिणाम
तिरस्कृत कर उसको तुम भूल
बनाते हो असफल भवधाम

~~4) दुख की पिछली रजनी बीच
विकसता सुख का नवल प्रभात~~

~~5) विषमता की पीड़ा से व्यस्त
हो रहा स्पंदित विश्व महान~~

6) कर्म का भोग भोग का कर्म
यही जड़ का चेतन आनंद

7) दया माया ममता लो आज
मधुरिमा लो अगाध विश्वास

8) शक्ति के विद्युत्कण, जो व्यस्त विकल बिखरे हैं, हो निरुपाय
समन्वय उनका करे समस्त
विजयिनी मानवता हो जाए

अन्य

1) वर्गों की खाई बन फैली
कभी नहीं जो मिलने को

2) बिखरी अलकें ज्यों तर्कजाल
3) जो बुद्धि कहे उसको न मानकर
फिर नर किसकी शरण जाए
4) यह प्रकृति परम रमणीय अखिल
ऐश्वर्य भरी शोधक विहीन
5) विज्ञान सहज साधन उपाय
6) आह! प्रजापति यह न हुआ है,
कभी न होगा
7) हिमगिरि के उत्तुंग शिखर पर
बैठ शिला की शीतल छांह
एक पुरुष भीगे नयनों से
देख रहा था प्रलय प्रवाह
8) क्या तुम्हें देखकर आते यों
मतवाली कोयल बोली थी?

महादेवी वर्मा

नीहार

उन सूखे ओठों के विषाद
में मिल जाने दो हे उदार

रश्मि

कनक से दिन मोती सी रात — कौतूहल
× × × ×
मिटाता रंगता बारंबार — जिज्ञासा, प्रकृति सौन्दर्य
कौन यह जग का चित्राधार

मैं तुमसे हूँ एक, एक है जैसे रश्मि प्रकाश
मैं तुमसे हूँ भिन्न, भिन्न धन से ज्यों तड़ित विलास

नीरजा

विरह का जलजात जीवन, विरह का जलजात
वेदना में मिला जन्म, करुणा में मिला आवास

मेरे हँसते अधर नहीं, जग की आँसू लड़ियाँ देखो
मेरे गीले पलक छुओ मत, मुरझायी कलियाँ देखो — करुणा

सांध्यगीत

मिलन का मत नाम लो,
मैं विरह में चिर हूँ

मैं नीर भरी दुख की बदली — दुख
× × × × विस्तृत नभ का कोई कोना
मेरा न कभी अपना होना
परिचय इतना इतिहास यही — निराशा
उमड़ी कल थी, मिट आज चली

अन्य — भीतर

1) प्रिय मुझी में खो गया
अब दूत को किस देश भेजूँ
2) प्रिय चिरंतन है सजनि
क्षण क्षण नवीन सुहागिन मैं
3) अपने इस सूनेपन की
मैं हूँ रानी मतवाली
प्राणों का दीप जलाकर
करती रहती दीवाली
4) सुख-दुःख में कौन है तीखा
मैं न जानी मैं न सीखा — सुख दुख

---

5) अब असीम से हो जाएगा,
मेरी लघु सीमा का मेल
देखोगे तब देव अमरता
खेलेगी मिटने का खेल
6) शून्यता में शून्यता का
अभिमान ही मुझको बनाता

7) क्या पूजन क्या अर्चन रे → उपमा
उस असीम का सुन्दर मंदिर
मेरा लघुतम जीवन रे

8) पथ न भूले एक पग भी — करुणा
घर न खोये लघु विहग भी
स्निग्ध लौ की तूलिका से
आंक सबकी राह उज्ज्वल — राष्ट्रीयता

9) जाग तुझको दूर जाना

11) मेरे प्रियतम को आता है तम के परदे में आना — (सामाजिक)

10) यह मंदिर का दीप
इसे नीरव जलने दो

सुमित्रानंदन पंत

1) सुन्दर है सुमन, विहग सुन्दर
मानव तुम सबसे सुन्दरतम

2) तुम्हारे छूने में था प्राण
संग में पावन गंगा स्नान

3) छोड़ द्रुमों की मृदु छाया
तोड़ प्रकृति से भी माया
बाले तेरे बाल जाल में
कैसे उलझा दूँ लोचन

4) पूर्णतंत्र मानव वह ईश्वर
मानव का विधि उसके भीतर

5) जो है समर्थ जो शक्तिमान
जीने का अधिकार उन्हें

6) वियोगी होगा पहला कवि
आह से उपजा होगा गान
निकलकर आँखों से चुपचाप
वही होगी कविता अनजान

7) एक शक्ति से जग प्रपंच
यह विकसित

8) देख रहा हूँ आज विश्व को
मैं ग्रामीण नयन से
सोच रहा हूँ जटिल जगत पर
जीवन पर जनमन से

9) न जाने नक्षत्रों से कौन
निमंत्रण देता मुझको मौन

10) तुम वहन कर सको
जनमन में मेरे विचार
वाणी मेरी चाहिए
तुम्हें क्या अलंकार?

Scanned by CamScanner

माखनलाल चतुर्वेदी

1) मुझे तोड़ लेना वनमाली
उस पथ पर तुम देना फेंक
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने
जिस पथ जावे वीर अनेक

2) शिल्प गया वाणिज्य गया,
शुभ शिक्षा का है मान नहीं

3) चूसते हो फल?
सम्भालो,
रक्त मेरा भर रहा है
सब फलों में

4) मेरा लड़का तेरा नाती
उसकी भावज उसकी बेटी
× × × × ×
अंधे तू परोस दे रोटी

सुभद्रा कुमारी चौहान

1) बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी
खूब लड़ी मरदानी वो तो
झाँसी वाली रानी थी

2) सबल पुरुष यदि भीरु बनें तो
हमको दे वरदान सखी
अबलाएँ उठ पड़े देश में
करे युद्ध घमसान सखी

3) वीरों का कैसा हो वसंत

4) जरा जरा सी बातों पर (प्रियतम से)
मत करो मेरे अभिमानी
लो प्रसन्न हो जाओ
गलती मैंने अपनी सब मानी

5) चरणों पर अर्पित है इसको
चाहो तो स्वीकार करो
यह तो वस्तु तुम्हारी ही है
ठुकरा दो या प्यार करो

Scanned by CamScanner

बालकृष्ण शर्मा नवीन

1) कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ
जिससे उथल-पुथल मच जाए

2) और चाटते जूठे बरतन
उस दिन देखा मैंने नर को
उस दिन सोचा क्यों न लगा दूँ
आग दुनिया भर को

3) साकी भर भर ला तू अपनी हाला

भगवती चरण वर्मा

1) हम दीवानों की क्या हस्ती है
है आज यहाँ, कल वहाँ चले
मस्ती का आलम साथ चला
हम धूल उड़ाते जहाँ चले

2) गूँज उठे जय हिन्द नाद से
सकल नगर औ ग्राम
मातृ-भू! शत शत बार प्रणाम

नरेन्द्र शर्मा

1) प्रथम दरस के बाद तुम्हारे
प्रथम परस के पहले
जागे थे जो मन में सहसा
सुन्दर स्वप्न सुनहले

2) वरदान दो माँ भारती
जो अग्नि भी चन्दन बने
जय जयति भारत भारती

बच्चन

1) मिट्टी का तन
मस्ती का मन
क्षणभर जीवन
मेरा परिचय

2) मुसलमान औ हिन्दू दो हैं
एक मगर उनका प्याला
बैर बढ़ाते मन्दिर मस्जिद
मेल कराती मधुशाला

3) इस पार प्रिये, तुम हो मधु है
उस पार न जाने, क्या होगा

4) है अंधेरी रात, पर दीपक जलाना
कब मना है

रामधारी सिंह दिनकर

1) सफल देश में हलाहल है
दिल्ली में हला है
दिल्ली में रोशनी
भारत में अँधियारा है

कुरुक्षेत्र

2) उफ् ज्वलित कितना गरलमय व्यंग्य है
पाँच ही असहिष्णु नर के द्वेष से
हो गया संहार पूरे देश का

3) युधिष्ठिर! सत्य की अन्वेषणा पातक नहीं है
नरक उनके लिए जो पाप को स्वीकारते हैं
न उनके लिए जो रण में उसे ललकारते हैं

4) छीनता हो स्वत्व कोई और तू
तप त्याग से काम ले यह पाप है

5) रुग्ण होना चाहता कोई नहीं
रोग लेकिन आ गया जब पास हो
तिक्त औषधि के सिवा उपचार क्या
शमित होगा वह नहीं मिष्टान्न से

6) किन्तु उठता प्रश्न जब समुदाय का
भूलना पड़ता हमें तप त्याग भी

7) छीनो छुओ मत हृदय रक्त
अपना मुझको पीने दो
अचल रहे साम्राज्य शान्ति का
जियो और जीने दो

8) जब तक मनुज मनुज का
यह सुख भाग नहीं सम होगा
शमित न होगा कोलाहल
संघर्ष नहीं कम होगा

9) शान्ति नहीं तब तक जब तक
सुख भाग न नर का सम हो
नहीं किसी को बहुत अधिक हो
नहीं किसी को कम हो

10) ऊपर सब कुछ शून्य शून्य है
कुछ भी नहीं गगन में
धर्मराज जो कुछ भी है
वह मिट्टी में, जीवन में

11) जीवन उनका नहीं युधिष्ठिर
जो उससे डरते हैं
वह उनका जो चरण रोप
निर्भय होकर लड़ते हैं

12) क्रिया कर्म को छोड़ मनुज
कैसे निज सुख पाएगा
कर्म रहेगा साथ भाग
वह जहाँ कहीं जाएगा

13) कुरुक्षेत्र की धूल नहीं इति पंथ की
मानव ऊपर और चढ़ेगा
मनु का यह पुत्र निराश नहीं
नवधर्म- प्रदीप अवश्य जलेगा

14) कोमलता की लौ, क्रोध के आलोकों से लड़कर
है / सावधान मनुष्य

15) विज्ञान यदि है तलवार,
तो उसे फेंक दे तजकर मोह स्मृति के पार

16) राजतंत्र द्योतक है

Scanned by CamScanner

2) समर शेष है नहीं पाप का
भागी केवल व्याध
जो तटस्थ हैं समय लिखेगा
उनका भी अपराध

3) दो राह समय के रथ का घर्घर
नाद सुनो
सिंहासन खाली करो कि जनता
आती है

4) जा भाग मनुज का सहज शत्रु
मित्रता न मेरी पा सकता — रश्मिरथी

5) श्वानों को मिलता दूध भात
भूखे बच्चे अकुलाते हैं
माँ की छाती से लिपट
जाड़े की रात बिताते हैं।

6) टकराएँगे नक्षत्र निकर
बरसेगी भू पर वह्नि प्रखर
फण शेषनाग का डोलेगा
विकराल काल मुँह खोलेगा।
— कृष्ण की चेतावनी
रश्मिरथी

7) आदमी भी क्या अनोखा जीव होता है!
उलझनें अपनी बनाकर आप ही फँसता
और फिर बेचैन हो जगता न सोता है।
रात यों कहने लगा मुझसे गगन का चाँद

8) बत्ती जो नहीं जलाता है
रोशनी नहीं वह पाता है। (वीर)

9) ~~[illegible]~~
पाते हैं सम्मान तपोबल से भूतल पर
शूर
'जाति-जाति' का शोर मचाते केवल
कायर क्रूर — रश्मिरथी

10) कह दे शंकर से आज करें
वे प्रलय नृत्य फिर एक बार
सारे भारत में गूँज उठे
हर हर बम का महोच्चार

भारत भारती

1) सम्पूर्ण देशों से अधिक किस देश का
उत्कर्ष है ?
उसका कि जो ऋषि भूमि है वह कौन
भारतवर्ष है।

2) संसार को पहले हमीं ने ज्ञान शिक्षा
दान की।
आचार की व्यापार की व्यवहार की
विज्ञान की॥

3) वे आर्य ही थे जो अपने लिए जीते
न थे,
वे स्वार्थरत हो मोह की मदिरा कभी
पीते न थे।

4) सचमुच ब्रिटिश साम्राज्य ने हमको बहुत कुछ है दिया
ज्ञान का वैभव दिखाया समय से परिचित किया

5) केवल पुरुष ही थे न वे
जिनका जगत को गर्व था
गृह-देवियाँ भी थीं हमारी
देवियाँ ही सर्वथा

6) सप्रेम हिल मिल कर चलो
यात्रा सुखद होगी तभी

7) जो ~~कच्चा~~ देश कच्चा माल ही
उत्पन्न करके शान्त है,
उसका पतन एकान्त है,
सिद्धान्त यह निर्भ्रान्त है

8) वह पेट उनका पीठ से
मिलकर हुआ क्या एक है

9) हो जाए अच्छी भी फसल
तो लाभ कृषकों को कहाँ

10) भगवान को साक्षी बनाकर
यह अनंगोपासना

11) सैकड़ों पीछे यहाँ
दस भी
~~सुशिक्षित~~ जन नहीं
सुशिक्षित

12> हिन्दू समाज सभी गुणों से
आज कैसा हीन है।
वह क्षीण और मलीन है,
आलस्य में ही लीन है।

13> नर जाति की जननी
तथा शुभ शान्ति की स्रोतस्विनी
हा देव नारी जाति की
कैसी रही है दुर्गति

14> हमने स्वयं पशुवृत्ति का
साधन बना डाला उन्हें
सन्तान जनने मात्र को
वसनान्न दे पाला उन्हें

15> परतंत्र हैं हम मत कहो
अन्य यंत्रों के बिना

16> प्राचीन हो कि नवीन छोड़ो
रूढ़ियाँ जो हो बुरी
बनकर विवेकी तुम दिखाओ
हंस जैसी चातुरी

17> बंधन की रचना
करके कृपा सिखलाइए

18> अन्तःकरण में गूँजता राष्ट्रीयता का भाव हो

19> हम कौन थे, क्या हो गए और क्या होंगे अभी
आओ मिलकर आज विचारें ये समस्याएँ सभी

20> शासन किसी परजाति का, चाहे विवेक विशिष्ट हो
सम्भव नहीं है, किन्तु जो सर्वांश में वह इष्ट हो

मैथिलीशरण गुप्त

1) सत्याग्रह है कवच हमारा
कर देखो कोई भी वार
हार मानकर शत्रु स्वयं ही
करेंगे मित्राचार

2) केवल मनोरंजन न कवि का
कर्म होना चाहिए
उसमें उचित उपदेश का भी
मर्म होना चाहिए

3) न्यायार्थ अपने बन्धु को भी
दण्ड देना धर्म है

4) अच्छी आँख मिचौनी खेली
बार बार तुम छिपो और
मैं खोजूँ तुम्हें अकेली

साकेत

1) सन्देश यहाँ मैं नहीं
स्वर्ग का लाया
इस भूतल को ही
स्वर्ग बनाने आया

2) सजनि! रोता है मेरा गान
प्रिय तक नहीं पहुंच पाती
उसकी कोई तान

3) वह कोयल जो कूक रही थी
आज हूक भरती है

4) ओ गौरव गिरि उच्च उदार

5) भारत लक्ष्मी पड़ी
राक्षसों के बंधन में

6) स्वत्वों की भिक्षा कैसी
क्या अन्याय सहोगे तुम?

7) मूँदे अनन्त ने नयन
धार वह झाँकी

यशोधरा

कथन प्रकृति

1) अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी
आँचल में है दूध और आँखों में पानी

2) सखि वे मुझसे कहकर जाते
कह तो क्या वे मुझको अपनी
पथबाधा ही पाते?

3) सिद्धि हेतु स्वामी गए,
यह गौरव की बात।
पर चोरी चोरी गए,
यही बड़ा व्याघात।

1) देशभक्त वीरो मरने से नेक नहीं डरना होगा
प्राणों का बलिदान देश की वेदी पर करना होगा

Scanned by CamScanner

श्रीधर पाठक

1) जगत है सच्चा तनिक न कच्चा
समझो बच्चा इसका ~~भेद~~ भेद

2) लिखो न लेखनी करो बन्द
श्रीधर सम सब कवि स्वच्छन्द

3) बीता कातिक मास, शरद का अन्त है
लगा सकल सुखदायक ऋतु हेमन्त है
ज्वार बाजरा आदि सभी के कट गए
खलयान के काम से किसान निपट गए

4) प्रकृति यहाँ एकान्त बैठी/ निज रूप
सँवारती

5) प्रेम स्वर्ग है, स्वर्ग प्रेम है
प्रेम अशंक अशोक ( )

अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

1) दिवस का अवसान समीप था
गगन था कुछ लोहित हो चला
तरु शिखा पर अब थी राजती
कमलिनी कुल वल्लभ की प्रभा

2) प्यारे जीवें जगहित करें
गेह चाहे न आवें